बाजार में जयमाला के मोती

डॉ. श्यामबाबू शर्मा
एकेडमिक काउंसलर इग्नू,
शिलांग-793001
मो. 9863531572

भरतमुनि के नाट्यशास्त्र में निरूपित संगीत के मूलभूत सिद्धांतों के विस्तार को देखते हुए यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि ईसा से कई सदी पूर्व ही भारत में संगीत कला और संगीतशास्त्र का विकास हो चुका था। ऐसे ही भारतीय संगीत का विकास अत्यंत आधुनिक है। संगीत से आज जो अर्थ समझा जाता है, उसका विकास यूरोप में प्रायः डेढ़ सौ वर्ष से अधिक पुराना नहीं है। इसके क्रमिक विकास की शुरुआत पाइथागोरस से मानी जा सकती है। म्यूजिकालाजी के रूप में अठारहवीं सदी के उत्तरार्ध में फार्कल ने इसका निरूपण किया। बीसवीं सदी के आरंभ में विज्ञान व तकनीकी के विकास क्रम में संगीत को संग्रहित होने की प्रणालियों का विकास हुआ और यह एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने लगा। संगीत में एक क्रांतिकारी युग आया। रेडियो के आने से घर बैठकर किसी भी घराने के गायक-वादक को सुनना सहज बात हो गयी। और उनके गायन-वादन की विशिष्टता ग्रहण करने में रुकावट

नहीं रही। माइक्रोफोन के आने से अगणित श्रोताओं तक अभिव्यक्ति को पहुँचाना सरल होने लगा।

भारत में रेडियो प्रसारण का आरंभ 23 जुलाई 1927 को हुआ था। आज़ादी के बाद भारत भर में कई रेडियो स्टेशनों का बड़ा नेटवर्क तैयार हुआ। फिल्म-संगीत का सुनहरा दौर था। फिल्म जगत के तमाम कालजयी संगीतकार एक से बढ़कर एक गीत तैयार कर रहे थे। उन दिनों श्रीलंका ब्राडकास्टिंग कार्पोरेशन की विदेश सेवा, जिसे हम आज रेडियो सीलोन के नाम से जानते हैं, हिंदी फिल्मों के गीत बजाती थी और अपने प्रायोजित कार्यक्रमों के ज़रिये लोकप्रियता के नए आयाम छू रही थी। पचास के दशक के उत्तरार्द्ध में आकाशवाणी के प्राइमरी-चैनल देश के सभी प्रमुख शहरों में सूचना, शिक्षा और मनोरंजन की ज़रूरतें पूरी कर रहे थे। पर तब आकाशवाणी से फिल्मी गीतों के प्रसारण को स्तरीय नहीं माना जाता था, गानों की स्क्रीनिंग होती थी। ये लोकप्रिय फिल्म-संगीत का सुनहरा दौर था। आकाशवाणी के तत्कालीन महानिदेशक गिरिजाकुमार माथुर ने पंडित नरेंद्र शर्मा, गोपालदास, केशव पंडित और अन्य सहयोगियों के साथ एक अखिल भारतीय मनोरंजन सेवा की परिकल्पना की। इसे नाम दिया गया विविधभारती। तब इसे आकाशवाणी का पंचरंगी कार्यक्रम कहा जाता था। पंचरंगी यानी कि पांचों ललित कलाओं का समावेश। विविध भारती अंग्रेज़ी के मिसिलेनियस शब्द का हिन्दी अनुवाद है, जो पं नरेन्द्र शर्मा ने इस

“उन दिनों श्रीलंका ब्राडकास्टिंग कार्पोरेशन की विदेश सेवा, जिसे हम आज रेडियो सीलोन के नाम से जानते हैं, हिंदी फिल्मों के गीत बजाती थी और अपने प्रायोजित कार्यक्रमों के ज़रिये लोकप्रियता के नए आयाम छू रही थी। पचास के दशक के उत्तरार्द्ध में आकाशवाणी के प्राइमरी-चैनल देश के सभी प्रमुख शहरों में सूचना, शिक्षा और मनोरंजन की ज़रूरतें पूरी कर रहे थे।